JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान वैश्विक परिद्रश्य और भारत राष्ट्र: आर्थिक भविष्य

(कोरोना काल के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ दिवस कान्त समाधिया

असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान)

राजकीय महिला महाविद्यालय

झाँसी (ऊ.प्र)- **284001**

ABSTRACT –

संयुक्त राष्ट्र की कॉन्फ्रेंस ऑन ट्रेड एंड डेवेलपमेंट (UNCTAD) ने ख़बर दी है कि कोरोना वायरस से प्रभावित दुनिया की 15 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक भारत भी है. चीन में उत्पादन में आई कमी का असर भारत से व्यापार पर भी पड़ा है और इससे भारत की अर्थव्यवस्था को क़रीब 34.8 करोड़ डॉलर तक का नुक़सान उठाना पड़ सकता है. यूरोप के आर्थिक सहयोग और विकास संगठन यानी ओईसीडी ने भी 2020-21 में भारत की अर्थव्यवस्था के विकास की गति का पूर्वानुमान 1.1 प्रतिशत घटा दिया है. ओईसीडी(OECD) ने पहले अनुमान लगाया था कि भारत की अर्थव्यवस्था की विकास दर 6.2 प्रतिशत रहेगी लेकिन अब उसने इसे कम करके 5.1 प्रतिशत कर दिया है. भारत सरकार, देश की जनता को ये भरोसा दिला रही है कि उन्हें घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है

कोरोना वायरस महामारी इस सदी का सबसे बड़ा वैश्विक संकट है। इसका विस्तार और गहराई बहुत ज्यादा है। इस सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट से पृथ्वी पर 7.8 अरब लोगों में से हर एक को खतरा है। इस बीमारी ने पूरे विश्व-के जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है और सभी बाजारों को बाधित कर दिया है। कोरोना वायरस ने जिस तरह से दुनिया के देशों की सरकारों की क्षमताओं या उनकी कमजोरियों को उजागर किया है | उससे काफी हद तक निश्चित है कि यह राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में मौजूदा तौर-तरीकों में स्थायी रूप से ऐसे बड़े बदलाव लाएगा, जो केवल बाद में ही चलकर पूरी तरह स्पष्ट हो पाएंगे। कोरोनो वायरस ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के उन आर्थिक दोषों को भी उजागर किया है, जिनकी अभी तक शांति काल में अनदेखी करना बहुत आसान था। कोविड-19 महामारी वैश्विक आर्थिक गति की दिशाओं को भले ही मौलिक रूप से नहीं बदलेगी लेकिन यह कुछ ऐसी प्रवृत्तियों की गति को और तेज कर देगी, जो पहले से ही चल रही हैं।

key words – कोरोना वायरस, UNCTAD, OECD, कोविड-19, सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट

सार्स-कोव-2 नामक नवीन कोरोना विषाणु वैश्विक महामारी कोविड-19 का स्रोत है, जोकि लगभग 213 देशों में कहर बरपा रही है, जिस कारण अनेक राष्ट्र बहुक्षेत्रीय लॉकडाउन और उससे उत्पन्न आर्थिक क्षति की भयावहता से जूझ रहे हैं. यह एक अत्यधिक संक्रामक व्याधि है, हालांकि भारतीय परिप्रेक्ष्य में इसके कारण होने वाली मृत्यु सामान्यतः कुल संक्रमित मामलों के केवल 4% से कम तक सीमित है. निम्न मृत्यु दर के उपरांत भी यह महामारी इतनी भयावह क्यों है? इसका उत्तर जीवविज्ञान में वर्णित डार्विन के सिद्धांत में निहित है, जोकि सभी जीवों की सबसे योग्य प्रजातियों के अस्तित्व की अवधारणा पर आधारित है.

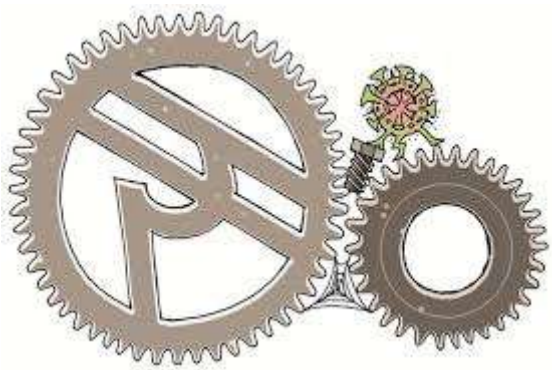

मनुष्य के सम्बन्ध में भी यह सिद्धान्त पूर्णतया प्रतिपादित होता है क्योंकि कोविड-19 के विरुद्ध लडाई में शारीरिक प्रतिरक्षा प्रणाली की भूमिका मानव जीवन की दशा एवं दिशा तय करने में महत्वपूर्ण साबित होगी. कोरोना संक्रमण की तीव्रता इस तथ्य से प्रमाणित होती है कि संक्रमित व्यक्ति की निकटता प्रायः किसी भी स्वस्थ व्यक्ति को कोविड-19 महामारी की चपेट में ले सकती है. साथ ही अब तक प्रतिरक्षक दवा की अनुपलब्धता एवं झुण्ड उन्मुक्ति (हर्ड इम्मुनिटी) प्राप्ति में होने वाली देरी भी इस महामारी को भयावह बनाते हैं. कोरोना विषाणु के संक्रमण को फेफडों तक पहुंचने से पूर्व नाक अथवा गले में समाप्त करने हेतु प्रचलित अनेक विधियां जैसे गर्म पेय पदार्थों का सेवन, नमक, हल्दी या लिस्टरीन के गरारे, हेयर ड्रायर का उपयोग इत्यादि किसी भी वैज्ञानिक शोध से समर्थित नहीं हैं अतः विश्वसनीयता से परे हैं.

महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि कोरोना संक्रमण की स्थिति में किस श्रेणी के व्यक्ति इसकी विभीषिका से अत्यधिक प्रभावित होते हैं? दुर्भाग्य वश यह श्रेणी अत्यधिक व्यापक है. संयुक्त राज्य अमेरिका स्थित रोग नियंत्रण एवं निवारण केंद्र के अनुसार 65 वर्ष से अधिक़ उम्र के व्यक्ति, जो लोग नर्सिंग होम अथवा देखभाल केन्द्रों में दीर्घकालिक रूप से अवस्थित हैं, दमा रोगी, गंभीर हृदय रोगी, मोटापाग्रस्त व्यक्ति, मधुमेह रोगी, गुर्दा रोगी, यकृत के रोग से ग्रसित व्यक्ति एवं कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली से ग्रसित व्यक्ति जिसमें कैंसर रोगी, धूम्रपान के आदी लोग, अस्थि मज्जा अथवा अंग प्रत्यर्पित व्यक्ति, अनियंत्रित एच आई वी संक्रमित व्यक्ति तथा लंबे समय से कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स का सेवन कर रहे लोग आते हैं. भारत की दृष्टि से इस श्रेणी में क्षय रोगी एवं बच्चे भी सम्मिलित हो जाते हैं क्योंकि अभी भी हम कुपोषण की समस्या से जूझ रहे हैं. भारत में लगभग 10 करोड़ वरिष्ठ नागरिक , लगभग 8 करोड़ मधुमेह रोगी, 11करोड़ से अधिक गुर्दे के रोगी, 40 करोड़ उच्च रक्तचाप ग्रसित, बच्चे बडे मिलाकर लगभग 10 करोड़ 60 लाख से अधिक दमा रोगी , लगभग 6 करोड़ 60 लाख मोटापे से ग्रसित और लगभग 22 करोड़ 80 लाख बच्चे नौ साल से कम उम्र के हैं जो कोरोना महामारी के प्रति अतिसंवेदनशील हैं. अतः विशिष्ट दवा और टीके (वैक्सीन) के अभाव में विशेषज्ञों द्वारा सुझाये गये सफाई एवं स्वास्थ्य सम्बंधी तरीकों के अतिरिक्त शारीरिक प्रतिरक्षा प्रणाली उन्नयन विधियां कोविड-19 के विरुद्ध युद्ध लड़ने में सहायक होंगी. इस विषय में केन्द्रीय आयुष मंत्रालय भी दिशा निर्देश जारी कर चुका है. शारीरिक प्रतिरक्षा प्रणाली उन्नयन हेतु विटामिन-सी (स्रोत- संतरे, नींबू मौसम्बी इत्यदि खट्टे फल), विटामिन डी (स्रोत- सूरज की रोशनी, संतरे का रस, सोया

दूध, अंडे की जर्दी, चीज, तैलीय मछली और मछली का तेल, कुछ विशिष्ट प्रजाति के मशरूम, गाय का दूध इत्यादि), प्रोटीन (स्रोत- अंडा, दालें, अंकुरित अनाज इत्यादि), खनिज विशेष रूप से जस्ता (स्रोत- लाल मांस, शैल मछली, चना, मसूर और सेम की फलियां, भांग, स्क्वैश, कद्दू, तिल इत्यादि के बीज, मूंगफली, काजू, बादाम इत्यादि नट्स) का प्रचुर मात्रा में सेवन करना चाहिये। पोषक तत्त्वों की पूर्ति हेतु पूरक आहारों से यथा संभव बचना चाहिए क्योंकि वे लाभ से अधिक हानि पहुंचाते हैं. मदिरापान, धूम्रपान, अन्य मादक पदार्थों का सेवन, शिथिल जीवन शैली, मांसपेशियों के निर्माण हेतु उपचय स्टेरॉयड का सेवन एवं दवा के रूप में कॉर्टिको स्टेरॉयड का अत्यधिक सेवन भी किसी स्वस्थ व्यक्ति की शारीरिक प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित कर सकता है. यदि 15 वर्ष पूर्व मैंने तनाव पूर्ण जीवन शैली का परित्याग कर सक्रिय जीवन शैली अपनाकर वैकल्पिक उपचार प्रणाली अपनाई होती तो सम्भवतः उच्च रक्तचाप पर नियंत्रण किया जा सकता था और सदैव के लिये एलोपैथिक दवाओं के सेवन से बचा जा सकता था जिसके परिणामस्वरूप मैं सदैव के लिये भारत के विशाल उच्च रक्तचाप रोगी समूह का हिस्सा बन गया हूं.

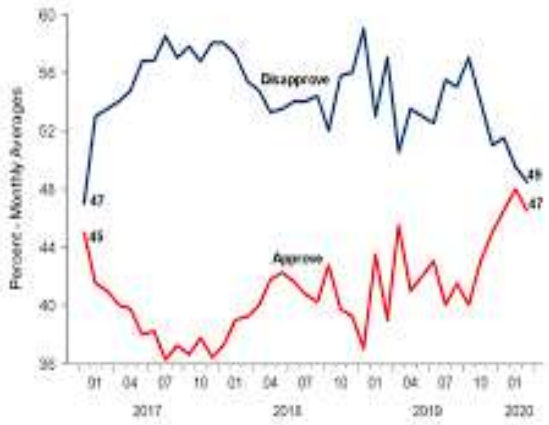

एंटीबायोटिक दवाओं का अंधाधुंध प्रयोग न सिर्फ शारीरिक प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित करता है वरन दवा के रूप में इनकी प्रभावकारिता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है. एंटीबायोटिक दवाओं के निरंतर घटते साम्राज्य के परिणामस्वरूप आज इनका दायरा 3000 से घट कर 2000 रह गया है. इस विकट स्थिति के लिये मुख्यतया बिना चिकित्सकीय सलाह के इनका सेवन एवं मुर्गी पालन व्यवसाय में अविवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग जिम्मेदार है. इसका कुछ श्रेय उन चिकित्सकों को भी जाता है जोकि औषधीय उत्पादन उद्यमियों द्वारा प्रभावित होकर क्षुद्र स्वार्थ पूर्ति के निहितार्थ हिप्पोक्रेटिक शपथ को ताक पर रखते हैं एवं अनावश्यक रूप से इनका सेवन उस लापरवाह एवं अशिक्षित जनता को करवाते हैं जोकि निदान की विधि पर आंख मूंद कर भरोसा करते हैं और प्रश्न नहीं पूछते. इसी प्रकार कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स (ट्राइमिसिनोलोन, कोर्टिसोन, प्रेडनिसोन, मिथाइलप्रेडिसोलोन इत्यादि) का उपयोग त्वरित दर्द निवारक, शारीरिक प्रतिरक्षा प्रणाली की अतिशीलता के प्रभाव को कम करने, सूजन को कम करने एवं जीवन रक्षक दवा के रूप में किया जाता है किन्तु इनका अनियंत्रित एवं अत्यधिक सेवन शरीर पर दीर्घकालिक प्रभाव छोडता है जिससे ग्लूकोमा, उच्च रक्तचाप, अनिद्रा, ऑस्टियोपोरोसिस इत्यादि बीमारियां होने का खतरा रहता है.

थोक ऑनलाइन कारोबार की सबसे बड़ी भारतीय कंपनी ट्रेड इंडिया डॉट कॉम (TradeIndia.com) के अनुसार, पिछले तीन महीनों में सैनिटाइज़र और मास्क की मांग में 316 प्रतिशत का इज़ाफ़ा हो गया है. ट्रेड इंडिया के सीओओ संदीप छेत्री ने बीबीसी को बताया, "भारत के मैन्यूफैक्चरिंग उद्योग ने इस मांग को पूरा करने के लिए अपना उत्पादन कई गुना बढ़ा दिया है. ऐसे अन्य निजी सुरक्षात्मक उत्पादों की मांग भारत में भी बढ़ रही है और बाक़ी दुनिया में भी. तो मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर इसका फ़ायदा उठाने की कोशिश कर रहा है."

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली के विशेषज्ञ भी उपरोक्त स्थिति से बचने हेतु विभिन्न माध्यमों जैसे रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्रों इत्यादि से जनता को सचेत करते रहते हैं. उक्त संस्थान में प्रदत्त शिक्षा भी छात्रों को भविष्य में नैतिक प्रथाओं का पालन करते हेतु प्रेरित करती है। कुछ अपवादों को छोड़ कर वे इसका अनुपालन भी करते हैं. इस तथ्य का अनुभव मुझे इस प्रकार हुआः मेरा बेटा बचपन में तीव्र शीतकालीन खांसी और जुकाम से बीमार हो गया. रेलवे कोच कारखाना अस्पताल कपूरथला में चिकित्सक ने, जोकि उक्त संस्थान की पूर्व छात्रा थी, भाप के सेवन और खांसी की दवा के सेवन की सलाह दी क्योंकि वह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर विश्वास करती थी. चार दिनों के बाद भी जब उसकी स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार नहीं हुआ तब उसने कुछ हल्के एंटीबायोटिक के सेवन की सलाह दी. तत्पश्चात भी स्थिति में सुधार न होने पर ही उसने गहन चिकित्सा का सहारा लिया और रोग निदान किया। हम माता-पिता के रूप में अधीर हो रहे थे, फिर भी उसने लगातार हमें शांत किया. अन्त में हम उसके रोग निदान की विधि से अत्यधिक प्रभावित हुए जब हमें यह ज्ञात हुआ कि अनेक विकसित देशों में भी इसी तरह की चिकित्सा पद्धति अपनाई जाती है.

उक्त उद्धरण यह समझने के लिये पर्याप्त हैं कि हमें यथा सम्भव रासायनिक औषधियों के उपयोग से बचना चाहिए और प्राकृतिक विधियों से शारीरिक प्रतिरक्षा प्रणाली को सुदृढ़ बनाना चाहिए। इस हेतु प्रमुख रूप से प्राकृतिक जीवन शैली का वरण किया जा्ना चाहिये जिसमें हल्दी, तुलसी, लहसुन, गिलोय (टीनोस्पोरा कॉर्डिफ़ोलिया) , इलायची, दालचीनी सहित प्राकृतिक उत्पादों का प्रचुरता से उपयोग, स्वच्छता का दैनिक क्रियाकलापों में प्रमुखता से समायोजन, मादक पदार्थों का परित्याग, नियमित व्यायाम, योग, ध्यान इत्यादि का अभ्यास समाहित हैं. उक्त क्रियाकलाप न केवल कोविड-19 से लड़ने में मदद करेंगे, वरन हमें अन्य मौसमी संक्रमणों से लड़ने में भी सक्षम बनाएंगे, जो हमें निरंतर परेशान करते रहते हैं. इसके अतिरिक्त प्राकृतिक चयन के नियमों के अनुसार हमारी संतानों को भी सशक्त बनाने हेतु गर्भवती माताओं को मादक पदार्थों के सेवन से बचना चाहिए, पौष्टिक भोजन का सेवन करना चाहिए, अच्छा संगीत सुनना चाहिए, और अच्छा साहित्य जिसमें धार्मिक पुस्तकें भी शामिल हैं, को पढ़ना चाहिए. साथ ही माताओं को शिशु हेतु स्तनपान के महत्त्व को समझ कर यथासंभव इसका उपयोग करना चाहिए क्योंकि यह शारीरिक प्रतिरक्षा प्रणाली को सशक्त बनाने में मुख्य भूमिका निभाता है. मुझे विश्वास है कि उपरोक्त तरीके न केवल कोरोना महामारी के विरुद्ध निर्णायक युद्ध में विजय पताका लहराने में सहायक होंगे, वरन् स्वस्थ राष्ट्र की परिकल्पना को भी साकार करेंगे. अंततोगत्वा शारीरिक, भावनात्मक और शैक्षणिक रूप से सुदृढ भारत वासी भारत की प्रगति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे

कोरोना वायरस महामारी से पैदा वित्तीय और आर्थिक संकट 2008-2009 की बड़ी मंदी के प्रभाव से ज्यादा हो सकता है। कोरोना वायरस महामारी एक बड़ी घटना है। इसके दूरगामी परिणामों की हम आज केवल कल्पना ही कर सकते हैं। आर्थिक रूप से बढ़ती श्रम लागतें, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनॉल्ड ट्रम्प के चीन के साथ व्यापार युद्ध, रोबोटिक्स, ऑटोमेशन और 3डी प्रिंटिंग जैसे मुद्दे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर असर डालते रहे हैं। जो आज कोरोना वायरस के हमले के बाद कंपनियां अब मल्टीस्टेप, मल्टीकाउंट सप्लाई चेन को बहुत हद कर सिकोड़ लेंगी, दुनिया के औद्योगिक उत्पादन परिदृश्य पर हावी हैं।

कोविड-19 ने अब इनमें से कई सप्लाई लिंक्स को तोड़ दिया है। कोरोना प्रभावित क्षेत्रों में फैक्ट्रियां बंद होने से दूसरे निर्माताओं, अस्पतालों, फार्मेसियों, सुपरमार्केटों और खुदरा स्टोरों में उत्पादों की कमी हो गई है। ई-कॉमर्स की दिग्गज अमेज़न के प्लेटफार्म से जुड़ी केवल 45% चीनी कंपनियां ही अभी सामानों की सप्लाई कर रही हैं। इसके कारण अमेजन ने इटली और फ्रांस में गैर जरूरी सामानों की आपूर्ति के आर्डर लेना रोक दिया। वैश्वीकरण ने कंपनियों को दुनिया भर में विनिर्माण करने और वेयरहाउसिंग की लागतों को दरकिनार करते हुए अपने उत्पादों को बाजार में सीधे पहुंचाने की अनुमति दी है। कुछ दिनों से अधिक समय तक आलमारियों में पड़े रहने वाले सामानों को बाजार की विफलता माना जाता था। आपूर्ति किये जाने वाले सामानों को सावधानी से और वैश्विक स्तर पर निर्धारित स्थानों पर भेजना पड़ता है।

कोविड-19 ने साबित कर दिया है कि वायरस न केवल लोगों को संक्रमित कर सकते हैं, बल्कि पूरी आर्थिक प्रणाली को ध्वस्त कर सकते हैं। कोरोना वायरस महामारी के कारण अगर आने वाले समय में पश्चिमी देशों के व्यवसायों और एशियाई और अफ्रीकी देशों के श्रम बल की श्रृंखला कमजोर पड़ती है तो लंबी अवधि में संभवतः वैश्विक अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता घट जाएगी। इसके बदलने से वर्तमान अंतरराष्ट्रीय प्रणाली बड़े दबाव में आ जाएगी। जो साफ तौर पर पश्चिमी विकसित देशों के पक्ष में झुकी हुई है। वैश्विक अर्थव्यवस्था का यह जोखिम विशेष रूप से विकासशील देशों, आर्थिक रूप से कमजोर श्रमिकों और गरीब लोगों के एक बड़े हिस्से के लिए बहुत अच्छा साबित हो सकता है। इससे उनके लिये नई संभावनाओं और अवसरों का मार्ग खुल सकता है। इसके परिणाम-स्वरूप वैश्विक पूंजीवाद में एक नाटकीय नया चरण आ सकता है। जिसमें आपूर्ति श्रृंखलाओं को आस-पास ही रखा जाता है और भविष्य के आपात व्यवधानों से बचने के लिए गोदामों को ज्यादा सामान से भरा रखा जाता है। यह कंपनियों के हाल के मुनाफे में कटौती कर सकता है, लेकिन पूरी आर्थिक प्रणाली को अधिक लचीला बना सकता है।

महामारी के बाद ज्यादा से ज्यादा कंपनियां अब यह जानने का प्रयास करेंगी कि उनकी मूल आपूर्ति कहां से आती है। सरकारें भी घरेलू उद्योगों की घरेलू बैकअप योजनाओं और भंडार के लिए रणनीतिक उद्योगों पर विचार कर रही हैं। इससे लाभप्रदता में गिरावट जरूर आएगी, लेकिन आपूर्ति स्थिरता में वृद्धि होने का उद्देश्य पूरा होना चाहिए। दुनिया की वित्तीय और आर्थिक प्रणाली के लिए कोरोना वायरस एक बुनियादी झटका है। यह पहले से ही माना जाता है कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला और वितरण नेटवर्क किसी बड़े झटके के लिए बहुत कमजोर हैं। इसलिए कोरोना वायरस महामारी का न केवल लंबे समय तक चलने वाला आर्थिक प्रभाव होगा, बल्कि इससे एक बड़ा मौलिक परिवर्तन भी होगा।

कोरोना वायरस अमेरिका-केंद्रित वैश्वीकरण की ओर से चीन-केंद्रित वैश्वीकरण की ओर बढ़ रही दुनिया की गति को केवल और बढ़ाने का काम करेगा। यह प्रवृत्ति क्यों तेजी से बढ़ेगी? इसका एक बड़ा कारण है कि अमेरिकी जनता ने वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अपना भरोसा करीब-करीब खो दिया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनॉल्ड ट्रम्प के कारण मुक्त व्यापार समझौते अब अपनी अंतिम सांसे गिन रहे हैं। इसके विपरीत चीन ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में विश्वास नहीं खोया है। क्योंकि इसके गहरे ऐतिहासिक कारण हैं।

चीनी नेताओं को यह अच्छी तरह से पता है कि चीन का 1842 से 1949 तक एक कमजोर राष्ट्र रहने का सबसे बड़ा कारण उसका स्वयं को दुनिया से काट देने का निरर्थक प्रयास था। इसके विपरीत पिछले कुछ दशकों में चीन का आर्थिक पुनरुत्थान वैश्विक जुड़ाव का परिणाम है। चीनी लोगों ने भी अपने बढ़ते सांस्कृतिक आत्मविश्वास का अनुभव किया है। उनका मानना है कि अब वे कहीं भी प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। इस सबके बावजूद कोविड-19 एक ऐसी दुनिया बनाएगा जो कम खुली, कम समृद्ध और कम आजाद हो सकती है। एक घातक वायरस, अपर्याप्त योजना और अक्षम नेतृत्व के संयोजन ने मानवता को एक नए और चिंताजनक मार्ग पर डाल दिया है। कोरोना वायरस महामारी वह बड़ा भार साबित हो सकता है जो आर्थिक वैश्वीकरण और उदारीकरण की कमर भी तोड़ सकता है। कोरोना वायरस जैसी पिछली कई विपत्तियों ने ताकतवर देशों के बीच की शक्ति प्रतिद्वंद्विता को समाप्त नहीं किया। ऐसी विपत्तियों में 1918-1919 की इन्फ्लूएंजा महामारी भी शामिल थी। इसने महान-शक्तियों की प्रतिद्वंद्विता को समाप्त नहीं किया और न ही वैश्विक सहयोग के एक नए युग की शुरुआत की। कोरोना वायरस से भी ऐसा कुछ नहीं होगा। कोरोना वायरस के बाद पूरी दुनिया में संभवतः ग्लोबलाइजेशन से पीछे हटने की गति तेज होते हुए देखी जा सकती है। क्योंकि नागरिक अपनी सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय सरकारों की ओर ज्यादा देख रहे हैं।

कई देशों ने दिखाया है कि एक निर्णायक कार्रवाई कोरोना वायरस के उभार को कम से कम कर सकती है। चीन ने आश्चर्यजनक रूप से अब घरेलू प्रसारण के एक भी नए मामले की सूचना नहीं दी। इससे यह स्पष्ट रूप से साबित हो गया है कि कोरोना वायरस को खत्म किया जा सकता है। पश्चिमी देश चीन की जबरदस्त रणनीति की नकल करने वाले नहीं हैं, लेकिन सिंगापुर, ताइवान, दक्षिण कोरिया और हांगकांग ने भी प्रदर्शित किया है कि कम से कम अस्थायी रूप से कोरोना वायरस को नियंत्रित किया जा सकता है। अमेरिका और दक्षिण कोरिया ने एक ही दिन में अपने पहले कोरोना

वायरस मामलों की सूचना दी थी। लेकिन दक्षिण कोरिया ने महामारी को गंभीरता से लिया, तुरंत एक प्रभावी परीक्षण व्यवस्था बनाई। इसका व्यापक रूप से उपयोग किया और इससे देखा गया कि कोरोना वायरस संक्रमण के मामले 90 प्रतिशत तक अधिक नीचे चले गए हैं।

इसके विपरीत अमेरिका के राष्ट्रपति डोनॉल्ड ट्रम्प ने कोरोनो वायरस से किसी बड़े संकट की संभावना को बार-बार यह कहते हुए खारिज कर दिया कि यह पूरी तरह से नियंत्रण में है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने अभी भी कनाडा, ऑस्ट्रिया और डेनमार्क के प्रति व्यक्ति परीक्षण की तुलना में केवल 10 प्रतिशत से थोड़ा ज्यादा ही कोरोना वायरस संक्रमण के परीक्षण किये हैं। जैसा कि हमेशा से होता रहा है, कोविड-19 का इतिहास इस संकट के "विजेताओं" द्वारा लिखा जाएगा। प्रत्येक राष्ट्र और हर व्यक्ति तेजी से नए और शक्तिशाली तरीकों से इस बीमारी से पैदा समस्याओं का सामना कर रहा है। वे राष्ट्र जो अपनी राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों के साथ-साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य को सुचारू बनाए रखने में सफल होंगे, वे साफ तौर पर ज्यादा विनाशकारी परिणामों का अनुभव करने वाले देशों के ऊपर सफलता का दावा करेंगे।

कोविड-19 पश्चिम से पूर्व की ओर शक्ति और प्रभाव के हस्तांतरण की गति को और तेज कर देगा। कोरोना वायरस से निपटने में दक्षिण कोरिया, ताइवान, वियतनाम, जापान और सिंगापुर ने सबसे बेहतर व्यवस्था दिखाई है। चीन ने अपनी शुरुआती गलतियों के बाद बहुत अच्छे और तेज सुधार के दम पर कोरोना वायरस पर काबू पाया है। इसकी तुलना में पश्चिमी देशों खासकर इटली, स्पेन और फ्रांस सहित पूरे यूरोप और अमेरिका के उपाय ढीले-ढाले रहे हैं। चीन, ताइवान, दक्षिण कोरिया और सिंगापुर जैसे देशों के हजारों छात्र अमेरिका और यूरोप के देशों में अपनी पढ़ाई छोड़ कर घर वापस लौट रहे हैं। कोरोना वायरस ने इन विकसित देशों में स्वास्थ्य सेवाओं के अक्षम और कमजोर ढांचे की पोल खोल कर रख दी है। अमेरिका में अस्पतालों में डॉक्टरों तक को मॉस्क जैसी मामूली चीज के लिए जूझना पड़ रहा है। अमेरिका में कई अस्पतालों ने कहा है कि अगर रोगियों की संख्या बढ़ी तो उन्हें वेंटिलेटर या आईसीयू सुविधाओं की कमी का सामना करना पड़ सकता है। इससे गंभीर रोगियों के मरने की संभावना बढ़ सकती है। अमेरिका में कोरोना वायरस से सबसे ज्यादा प्रभावित न्यूयॉर्क के मेयर बिल डे ब्लासियो ने तो साफ कह दिया है कि अगले 10 दिनों में शहर में मेडिकल सप्लाई के अभाव का सामना करना पड़ सकता है। उन्होंने कहा कि देश को सच का पता होना चाहिए। अगर ऐसे ही हालात बने रहे तो अप्रैल और मई में और भयानक स्थिति होने वाली है।

इटली में कोरोना वायरस से मरने वालों की संख्या बढ़कर करीब 5500 हो गई है। इटली में केवल शनिवार को एक ही दिन में 793 लोगों की कोरोना वायरस से मौत हुई। रविवार को इटली में कोरोना वायरस से 651 मौतें हुईं। इसी तरह स्पेन में मरने वालों की संख्या 1700 तक पहुंच गई है। इटली में जिस तरह से कोरोना वायरस बेकाबू हो गया है, उससे इटली की स्वास्थ्य व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है।(4) यहाँ की मदद करने के लिए रूस ने रविवार को अपनी सेना के मेडिकल दस्तों को आपात सेवा के लिए उतार दिया है। जबकि अमेरिका और उसके पश्चिमी सहयोगी देशों के संगठन नाटो ने इस मामले में कोई पहल नहीं की है। अमेरिकी सेना के जवानों को देश में यात्रा करने से भी रोक दिया गया है। इसने विकसित पश्चिमी देशों की चमक को धूमिल किया है।

सभी प्रकार की सरकारें संकट के प्रबंधन के लिए आपातकालीन उपाय अपनाएंगी। संकट खत्म होने के बाद इन नई शक्तियों को त्यागने के लिए कई लोग अनिच्छुक हो जाएंगे। अपने नागरिकों के सामने खुद को सक्षम साबित करने नेता तो और ज्यादा ताकतवर होंगे लेकिन जो असफल होंगे उनके लिए दूसरों को दोष देना मुश्किल होगा।

स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी एक प्रेस रिलीज़ के अनुसार, "इटली, ईरान, दक्षिण कोरिया और जापान के नागरिकों को जो भी वीज़ा और ई-वीज़ा 3 मार्च 2020 या उससे पहले जारी किए गए हैं और जिन्होंने अभी भारत में प्रवेश नहीं किया है, वो सभी वीज़ा तत्काल प्रभाव से निलंबित किए जाते हैं. सरकार ने नागरिकों को ये भी सलाह दी है कि वो

चीन, इटली, ईरान, रिपब्लिक ऑफ़ कोरिया, जापान, फ्रांस, स्पेन और जर्मनी की यात्रा तब तक न करें, जब तक ये बहुत ज़रूरी न हो."

यदि यूरोपीय संघ अपने 50 करोड़ नागरिकों को पर्याप्त सहायता प्रदान नहीं कर सका तो भविष्य में राष्ट्रीय सरकारें ब्रुसेल्स से ज्यादा शक्तियां वापस ले सकती हैं। कोरोना वायरस महामारी राज्य तंत्र और राष्ट्रवाद को मजबूत करेगी। अल्पावधि में कोरोना वायरस संकट पश्चिमी दुनिया में विचारधाराओं की रणनीतिक बहस में विभिन्न विरोधी खेमों को ताकत प्रदान करेगा। राष्ट्रवादी और उसके विरोधी, साम्यवादी और सोशल डेमोक्रेट्स, यहां तक कि उदारवादी अंतर्राष्ट्रीयतावादी भी अपने विचारों की तात्कालिक प्रासंगिकता के लिए इसमें कुछ न कुछ नए सबूत जरूर खोजेंगे।

कोरोना वायरस के कारण जो आर्थिक क्षति और सामाजिक तनाव सामने आया है, उसे देखते हुए राष्ट्रवादी उभार और ताकतवर देशों की शक्ति प्रतिद्वंद्विता और ज्यादा बढ़ेगी। किसी भी तरह से कोरोना वायरस संकट अंतरराष्ट्रीय शक्ति संरचना में जरूर बदलाव लायेगा। इसके अलावा इस समय और कुछ भी कह पाना मुश्किल है। एक विचार यह भी है कि मजदूरों की समस्या को दूर करने के लिए MNREGA में काम करने वालो को □□□□ में नियोजित किया जाये ताकि उन्हें साल भर का रोजगार और SKILL प्राप्त होगी वही दूसरी ओर भारतीय अर्थव्यवस्था में ४८% योगदान करने वाले □□□□ को काम करने वाले मिल जायेंगें .

निष्कर्ष रूप से भारतीय एवं वैश्विक जनमानस को यह समझना बहुत अपरिहार्य है कि इस कुम्भकर्णी संकट का दमन अवश्य होगा उसके लिए हमें अपने सबसे भरोसे मंद साथी धेर्य को बनाये रखना होगा .जैसा कि अग्र लिखित श्लोक में कहा भी गया है

शनैः पन्थाः शनैः कन्थाः शनैः पर्वतलंघनम् ।
शनैः वित्तं शनैः विद्या पञ्चैतानि शनैः शनैः ।।

सन्दर्भ सूची -

- प्रशांत डॉ,आर्मी कैडेट कॉलेज देहरादून –कोरोना महामारी से सीख
- सिंह राकेश ,२४/०३/२०२० –कोरोना महामारी और दुनिया
- राय निधि ,बीबीसी –बदलता उद्योग समुदाय
- भाटिया राजेश,मंडलीय अध्यक्ष पवन उद्योग वाराणसी
- http://susanskrit.org/sanskrit-subhashit-others/1679-2010-07-21-17-14-21.html
- https://www.google.com/url?sa=i&url=https%3A%2F%2Fwww.financialexpress.com
- https://www.google.com/url?sa=i&url=https%3A%2F%2Ftheconversation.com%
- https://www.google.com/url?sa=i&url=https%3A%2F%2Fwww.forbes.com
- https://link.springer.com/article/10.1007/s11010-021-04217-y
- https://en.wikipedia.org/wiki/COVID-19_pandemic_in_India
- https://rahat.up.nic.in/goorders.aspx
- https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1654281